JAF-001-001302 Seat No. _____

B. A. (Sem. III) (CBCS) Examination

November - 2019

Hindi : Paper - 3

(Sapt Ekanki - Vyakaran) (Compulsory)

(Old Course)

Faculty Code : 001

Subject Code : 001302

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (१) सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं ।

(२) प्रश्न के गुण दाहिनी तरफ निर्दिष्ट है ।

१ एकांकी की परिभाषा देते हुए एकांकी के तत्वों पर प्रकाश डालिए । १४

अथवा

१ 'पृथ्वीराज की आँखें' एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखकर पृथ्वीराज के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । १४

२ एकांकी के तत्वों के आधार पर 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए। १४

अथवा

२ 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में निरूपित मध्यवर्गीय रुढिबद्धता एवं स्वार्थलोलुपता का चित्रण कीजिए । १४

३ 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए । १४

अथवा

३ 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए उसके शीर्षक की विशेषताएँ बताइए । १४

४ एकांकी के तत्वों के आधार पर 'यहाँ रोना मना है ।' की समीक्षा कीजिए । १४

अथवा

४ 'दो कलाकार' एकांकी के प्रमुख दो पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए । १४

५ (अ) महानगरपालिका, राजकोट के स्वास्थ्य अधिकारी को मुहल्ले में मलेरिया फैल जाने की सूचना देते हुए एक पत्र लिखिए । ७

अथवा

(अ) श्री जे. पी. शाह कॉलेज, आणंद के हिन्दी विषय के रिक्त स्थान के लिए अपनी तरफ से आवेदन पत्र लिखिए । ७

(ब) निम्नलिखित परिच्छेद का सारलेखन कीजिए : ७

साहित्य का आधार जीवन है । जीवन की बुनियाद पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है । जीवन परमात्मा की सृष्टि है, इसलिए अनंत हैं, अबोध हैं, अगम्य हैं । साहित्य मनुष्य की सृष्टि है, इसलिए सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिमिति हैं । जीवन परमात्मा को अपने कामों में जवाबदेह हैं; या नहीं, हमें मालूम नहीं, लेकिन साहित्य तो मनुष्य के सामने जवाबदेह है । जीवन का उद्देश्य आनंद हैं । मनुष्य जीवन पर्यंत आनंद की ही खोज में लगा रहता हैं । किसी को वह द्रव्य में मिलता हैं; किसी को बड़े भवन में, किसी को भरे–पूरे परिवार में मिलता हैं । परन्तु साहित्य का आनंद इस आनंद से ऊँचा है । वह पवित्र है, उसका आधार सुंदर और सत्य है । साहित्य परमानन्द प्रदान करता है ।

अथवा

(ब) मनुष्य का मन सदैव गतिशील रहता है, ऐसा होता है कि विरोधी शक्तियाँ उसे अपनी ओर खींचती है । जो मनुष्य मन की विपरीत परिस्थितियों में अपने को मजबूती से खड़ा नहीं रख सकते और उस धारा के साथ बह जाते हैं वे कभी उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकेंगे । उनके लिए तो यह कहना चाहिए कि वे जीवित रहते हुए मुर्दे के समान हैं । मन की अवस्था तो सभी की पलटती है । जो व्यक्ति समय एवं परिस्थिति को समझ लेते हैं; वे धोखा नहीं उठा सकते और कठिनाइयों के बीच में भी अपना रास्ता खोज निकालते हैं । कारण जानकर वे उसके विषैले और दूषित प्रभाव से भी बचने का प्रयत्न करते हैं । लेकिन ऐसे लोगों की भी संख्या मिलेगी, जो अपनी मनोदशा से त्रस्त हो जाते हैं और ऐसे काम कर बैठते हैं, जिनसे उनके शांतिमय जीवन में अशान्ति का विष घुल जाता है । ७